STD - VI

Ch - 22

जलाते चलो

Date 07.1.22 (Friday)

कठिन शब्द

अँधेरा	ज्योति	स्वर्ण
चुनौती	अनगिनत	निशा
तिमिर	निरंतर	स्नेह
स्वीकार	स्वयं	साक्षी

शब्दार्थ

तिमिर - अंधकार

चुनौती - ललकार (चैलेंज)

सरिता - नदी

स्वर्ण - सोने का धातु

निशा - रात, रात्रि

शिला - पत्थर

लौ - ज्वाला / ज्योति

साक्षी - गवा

निरंतर - लगातार

STD-VI

Ch-22

जलाते - चलो

Date 07.1.22 (Friday)

Q-1 कवि ने 'धरा का अँधेरा' किस अर्थ में प्रयुक्त किया है ?

A- कवि ने 'धरा का अँधेरा' अज्ञानता के अर्थ में प्रयुक्त किया है। कवि का कहना है कि तुम ज्ञान के दिये जलाते चलो कभी न कभी तो धरा से अज्ञानता का अँधकार दूर होगा।

2- समय किस बात का साक्षी है ?

A- यहाँ पर कवि कह रहे हैं कि तुमने हर वक्त, हर घड़ी और हर परिस्तिति में ज्ञान के दिये जलाए, और समय इस बात का साक्षी है कि पवन रूपी अज्ञानता तुम्हेरे ज्ञान रूपी दिये को हमेशा और कदम-कदम पर बुझाते चले आ रहा है।

3- भावार्थ लिखो :-

(क) रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा।

A- इस पंक्ति से कवि का यह तात्पर्य है कि चाहे जितनी भी कठिन परिस्थिती आए परंतु तुम हमेशा ज्ञान के दिये जलाए रखना, ताकि किसी-न-किसी दिन तो लोगों को इसका महत्त्व पता चलेगा।

4- कवि ने इस कविता में किसको संबोधित किया है ?
A- (ग) मनुष्य को ।

भाषा और व्याकरण

1. गाँव में रहनेवाला - ग्रामीण
2. जिसका कोई अंत न हो - अनंत
3. जहाँ चार रास्ते मिलते हों - चौराहा
4. महीने में एक बार होनेवाला - मासिक
5. जिसका कोई सहारा न हो - बेसहारा
6. सब कुछ जाननेवाला - सर्वज्ञ